Gurgaon Today, March 17, 2016, Edition : Gurgaon, Page 3 :

फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हार्ट इंस्टीट्यूट ने भारत में पेश किया पहला एक्सटर्नल आईसीडी

समाचार निर्देश/निशा कुमारी

गुड़गांव। फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हार्ट इंस्टीट्यूट के चेयरमैन डॉ. अशोक सेठ के नेतृत्व में भारत में पहली बार एक और जीवन रक्षक टैक्नोलॉजी पेश की गई है, जिसे 'लाइफवेस्ट' कहा जाता है। यह पहना जाने वाला एक डिफाइब्रिलेटर है, जिसका इस्तेमाल हृदय गति रुकने के दौरान उपचार और खासतौर पर गंभीर हृदयाघात के बाद जीवन बचाने में किया जाता है। 37 वर्षीय युवा करन नंदा को फुटबॉल खेलने के दौरान अचानक गंभीर हार्ट अटैक का सामना करना पड़ा और उन्हें आनन-फानन में गंभीर अवस्था में वेंटिलेटर और जीवन रक्षक उपकरणों पर एफईएचआई लाया गया। उन्हें गंभीर हृदयाघात हुआ था लेकिन उनकी जान बच गई थी। डॉ. सेठ और उनकी टीम द्वारा अवरुद्ध धमनी को खोलने के लिए उनकी आपात एंजियोप्लास्टी करनी पड़ी और अगले तीन हफ्तों में उनकी स्थिति में धीरे-धीरे सुधार होने लगा और उनकी जान बच गई। करन नंदा अब सामान्य महसूस कर रहे हैं और धीरे-धीरे वह अपने दैनिक जीवन और कार्यों को करने लगे हैं गंभीर हार्ट अटैक की वजह से उन्हें अगले कुछ महीनों के दौरान फिर सेअचानक हृदयाघात का जोखिम बना हुआथा, जिसके बाद उनका जोखिम कम हो सकता था। इसलिए उनमें स्थायी और परंपरागत इम्प्लांटेबल डिफीब्रिलेटर (आईसीडी)का प्रत्यारोपण नहीं किया गया और उन्हें पहना जाने वाला डिफीब्रिलेटर दिया गया था।

'लाइफवेस्ट' एक इनोवेटिव जीवन रक्षक उपकरण है, जिसे 'बनियान' की तरह पहना जा सकता है। इसे मरीज दिन भर पहनकर अपने रोजमर्रा के कामों को कर सकता है और इससे उसके जीवन को पूरा संरक्षण मिलता है, क्योंकि यह होने वाले हृदयाघात का प्रभावी तरीके से उपचार करने में सक्षम है। करन नंदा अब अपने सामान्य दिनचर्या और काम पर जाने में सक्षम हैं और साथ ही साथ वह टहलने भी जा सकते हैं, क्योंकि यह उपकरण उनकी हृदय गति और लय को निरंतर संवेदना प्रदान करता है और जब भी उपचार की जरूरत होगी यह उपचार प्रदान करने और जीवन बचाने के लिए पूरी तरह से तैयार रहता है। पिछले 6 माह के दौरान हार्ट अटैक से पीड़ित तीन युवाओं में 'लाइफवेस्ट' का इस्तेमाल किया जा चुका है और तीनों मरीज 25 से 40 वर्ष के बीच के थे और उन्हें गंभीर हार्ट अटैक हुआ था।

लाइफवेस्ट की सलाह ऐसे मरीजों को दी जाती है, जिन्हें सडन कार्डियक डेथ (एससीडी) का खतरा हो। इसके साथ ही कार्डियोमायोपैथी या कॉन्जेस्टिव हार्ट फेल्योर से पीड़ित मरीजों को भी इसे अपनाने की सलाह दी जाती है, क्योंकि ऐसे मरीजों में जोखिम बढ़ जाता है। एससीडी जोखिम का पता नहीं चलने की स्थिति में यह उपकरण एक अंतरिम सुरक्षा प्रदान करता है और इलाज करने वाले चिकित्सक को मरीज के हृदय की ताल व लय के जोखिमों का आकलन करने और सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा प्रणालियों की योजना बनाने में समय की जरूरत होती है।

यह उपकरण हल्के वजन का है और इसे बनियान की तरह पहन जा सकता है और मरीज अपनी दिनचर्या में लौट सकता है, जहाँ एससीए (सडन कार्डियक अरेस्ट) के तनाव को भी कम करता है। उपकरण निरंतर मरीज के हृदय की निगरानी करता है और इसेजीवन को जोखिम में डालने वाले हार्ट रिद्म का पता चलने की संथिति में सामान्य हार्ट रिद्म पुनर्स्थापित करने के लिए उपचार प्रदान करने की खातिर भी डिजाइन किया गया है।

फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हार्ट इंस्टीट्यूट के चेयरमैन डॉ. अशोक सेठ ने कहा, "हमने लगातार ऐसे मामलों में चुनौती पेश कर है, जहां तत्काल उपचार के समाधान की योजना बनाना व्यवहार्य नहीं हो सकती है। इस मामले में भी सर्वश्रेष्ठ चिकित्सकीय उपचार तक पहुंचने के लिए समुचित अध्ययन और मूल्यांकन की जरूरत थी। ऐसे मामले में मरीज को सुरक्षा से युक्त एक उपकरण प्रदान करने से हमें बेहतर तरीके से योजना बनाने, मरीज के सडन कार्डियक अरेस्ट के जोखिमों को समझते हुए उसे कम करने में मदद मिली।"

एफईएचआई के जोनल डायरेक्टर डॉ. सोमेश मित्तल ने कहा, "एफईएचआई के पास सर्वश्रेष्ठ कार्डियोलॉजिस्ट की टीम है, जो नवीनतम उपचार के समाधान पेश करने के लिए निरंतर परिश्रम करती है और संगठन की उपलब्धियों को उच्च स्तर पर ले जाते हैं। लाइफवेस्ट को पेश करने के साथ ही हम मरीजों के लिए एक और विकल्प की राह खोल रहे हैं, जहां वे चिकित्सों द्वारा उनके परिवार के सदस्यों को दिए गए सुझाव का मूल्यांकन कर सकते हैं।"

मरीज करन नंदा ने कहा, "मुझे वास्तव में डॉ. सेठ का आभारी हूं, जिन्होंने मुझे जीवन दिया और मेरी जिंदगी को दोबारा पटरी पर ला दिया। मेरे जीवन को बचाने के लिए मेरा पूरा परिवार उनका आभारी है।" भारत में हर साल करीब 1.3 से 4.6 मिलियन लोगों को हार्ट अटैक होता है और हर वर्ष करीब 2.5 लाख नए मामले सामने आते हैं। हार्ट अटैक के नए मरीजों में मृत्यु दर काफी ज्यादा होती है और पहले साल में यह जोखिम 40 प्रतिशत तक होता है, जिसमें सडन कार्डियक डेथ (एससीडी) का भी उच्च जोखिम रहता है। सामान्य लोगों की तुलना में हार्ट अटैक के मरीजों में एससीडी होने की आशंका 6 से 9 गुना ज्यादा होती है और हार्ट फेल्योर डिकंपनसेशन या मायोकार्डियल इन्फेक्शन की स्थिति में अस्पताल में भर्ती होने के मामले में एससीडी जोखिम और बढ़ता है। इसी तरह, चिकित्सकीय उपचार के अधिकतम लाभों, जिसमें मरीज के सामान्य होने में तीन माह या इससे ज्यादा समय लग सकता है, से हार्ट अटैक के मरीजों की स्थिति में सुधार हो सकता है।